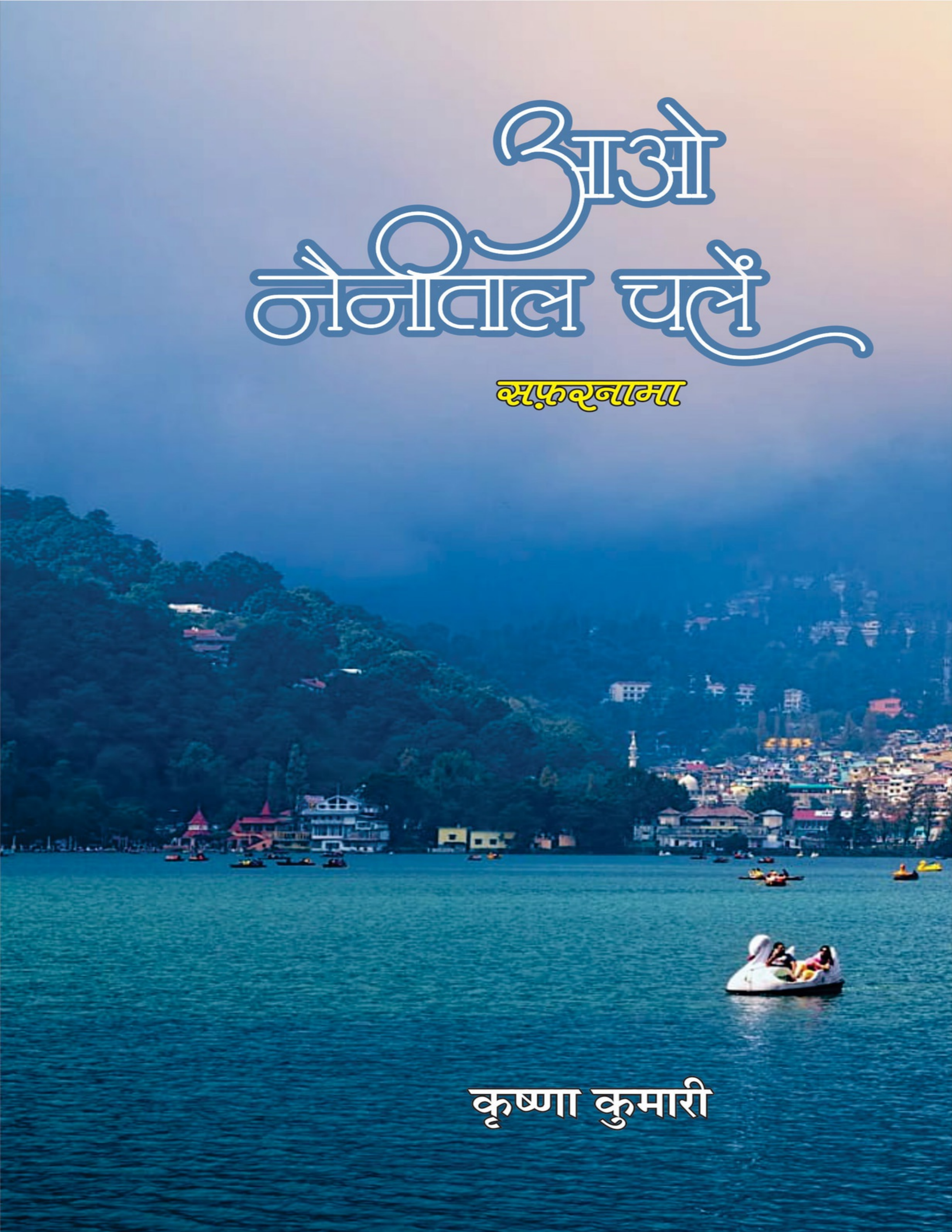
आओ
नैनीताल चलें
सफ़रनामा
कृष्णा कुमारी

आओ नैनीताल चलें

कृष्णा कुमारी

आओ नैनीताल चलें

(सफ़रनामा)

कृष्णा कुमारी

बोधि
साहित्य जन-जन के लिए

बोधि प्रकाशन

सी-46, सुदर्शनपुरा इंडस्ट्रियल एरिया एक्सटेंशन
नाला रोड, 22 गोदाम, जयपुर-302006
फोन : 0141-2213700, 9829018087
ई-मेल : bodhiprakashan@gmail.com

कॉपीराइट : कृष्णा कुमारी
प्रथम संस्करण : जनवरी, 2019
ISBN : 978-93-89177-01-5
कम्प्यूटर ग्राफिक्स : बनवारी कुमावत 'राज'
आवरण संयोजन : बोधि टीम

नैनीताल

अल्मोड़ा

कौसानी

रानीखेत को...

कृति-सन्दर्भ

गद्य साहित्य की विविध विधाओं में 'यात्रा-वृत्त' का अपना ही महत्व है। 'अज्ञेय' जी की काव्यात्मक गद्य भाषा में जब उन के यात्रा-वर्णन प्रकाशित हो रहे थे, तब इस विधा-विशेष ने ध्यान आकर्षित किया था। रांगेय राघव ने बंगाल के अकाल पर गद्य-विधा में यात्रा-वृत्त, डायरी तथा रिपोर्ताज को मिला कर एक नया रूप प्रस्तुत किया था।

प्रकृति के प्रति जिन सहृदय साहित्यकारों में सहज आकर्षण है, उन्हें यात्रा की सुखानुभूति, रचना-कर्म की ओर प्रेरित कर रही है। कृष्णा कुमारी के अप्रकाशित सिंगापुर की यात्रा के वर्णनानुभव देखने का अवसर मिला है। लेखिका ने जिस प्रकार सूक्ष्म दृष्टि से बारीक ब्यौरों में वहाँ के वस्तु-जगत से सम्पर्कित अनुभूतियों का जो चित्रण किया है, वह अविस्मरणीय है। मैं अपने जीवन में, देश-विदेश में बहुत घूमा हूँ, पर न जाने क्यों ब्यौरे और उन के चित्त पर बनी स्मृतियाँ, समय के साथ धूमिल होती चली गई है। यह विधा, शुद्ध अतिरेक की माँग करती है, वह क्षमता कृष्णा जी के पास है। उन का मन सहज जिज्ञासा, कौतुहल के साथ वस्तु-जगत से सम्पर्क करता है। यह इन्द्रिय जन्य ज्ञान, अक्सर बुद्धि के दाँव-पेच छोड़ता हुआ, उन के अनुभव-जगत में उन्हें ले जाता है। यह उन का सहज स्वभाव है, यहाँ कृत्रिम, बनावटीपन नहीं है। प्रकृति उन के ही सम्मुख अपना हृदय खोल पाती है, जहाँ अनुभव की यात्रा में बुद्धि जन्य प्रत्यय बाधक न हो, एक दर्पण की तरह मनोग्राही दर्शन, चित्रित होता चला जाता है।

'आओ नैनीताल चलें' की भाषा प्रवाही तथा प्रभावी है। कोटा से गाज़ियाबाद तथा वहाँ से काठगोदाम, नैनीताल अल्मोड़ा, कौसानी, मल्लीताल, तल्लीताल, हिमालय, फ़िल्म की शूटिंग...छाटे-छोटे ब्यौरे और उन के साथ जुड़ी आत्मीयता विरल है। यात्रा वृत्त एक मूवी कैमरे की आँख से सम्पूर्ण परिदृश्य को दिखाता चला जाता है।

भाषा की यही चित्रात्मकता, सघन बिम्बात्मकता...कविता के साथ, गति लेती है, लगता है पास बहती हुई नदी कल-कल धारा के साथ आप भी चल रहे हों। यह बात दूसरी है कि आज की

दुनिया में भ्रमण तो होता है, पर उस का अनुभव-जगत बाहर ही रह जाता है। बुद्धिगत अभिगम, भीतर तक उस अनुभव को प्रवाहित नहीं होने देता। लेखिका का यह कथन स्तुत्य है कि 'भ्रमण-अनुभव भी ज्ञानात्मक सम्वेदनाओं की श्री वृद्धि में महत्वपूर्ण कारक है।

लेखिका का श्रम श्लाघनीय है, उन के पास काव्यात्मक, चित्रात्मक भाषा सम्पदा है, जिस से वे सुपठित गद्य की इस उत्कृष्ट कृति के सम्वर्द्धन में सफल रही हैं।

-डॉ. नरेन्द्र चतुर्वेदी
1-ल-1, दादाबाड़ी कोटा-324009

कृष्णा कुमारी 'कमसिन' : एक परिचय

उपनाम : कमसिन

माता-पिता : श्रीमती रामदुलारी एवं श्री प्रभू लाल वर्मा

पति : श्री कृष्ण प्रकाश

जन्म : 09 सितम्बर, चेचट, कोटा (राजस्थान) में।

शिक्षा : एम.ए., एम.एड.(मेरिट अवार्ड), साहित्य रत्न, आयुर्वेद रत्न, बी.जे.एम.सी.

सृजन विधाएं : मुख्यत: कविता, गीत, ग़ज़ल विधाओं में सृजन के साथ-साथ अनुवाद, रिपोर्ताज, स्लोगन, लघुकथा, कहानी, संस्मरण, साक्षात्कार, यात्रा-वृत्तांत, बाल-गीत इत्यादि हिन्दी, राजस्थानी, उर्दू व अंग्रेजी भाषाओं की विभिन्न विधाओं में भी निरंतर सृजन।

अभिरुचियाँ : संगीत, वाद्य एवं चित्रकारिता में विशेष रुचि के साथ साहित्य पठन, लेखन एवं विद्वजनों की सुसंगति।

प्रकाशन : 'मैं पुजारिन हूँ' (कविता संग्रह, 1995), 'प्रेम है केवल ढाई आखर' (निबंध, 2002), 'कितनी बार कहा है तुमसे' (कविता संग्रह, 2003), '...तो हम क्या करें' (ग़ज़ल, 2004), 'ज्योतिर्गमय' (आलेख, 2006), 'स्वप्निल कहानियाँ' (कहानी, 2006), 'आओ नैनीताल चलें' (यात्रा वृत्तांत, 2009), 'जंगल में फाग' (बाल-गीत, 2014), 'नागरिक चेतना' (निबन्ध, 2018)। विभिन्न राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय पत्र-पत्रिकाओं, संकलनों आदि में रचनाएँ प्रकाशित। 'अच्छे बच्चे' (बाल-कविता), 'क़तरा नदी में' (ग़ज़ल), 'दक्षिण की ओर' (यात्रा वृत्तांत), 'कुछ अपनी कुछ उनकी' (साक्षात्कार), 'अद्भुत है सिंगापुर' (यात्रा वृत्तांत) प्रकाशनाधीन। शिक्षा निदेशालय बीकानेर द्वारा पुस्तक समीक्षाएं प्रकाशित एवं शिक्षक दिवस पर प्रकाशित पुस्तक शृंखला में रचनाएँ निरंतर प्रकाशित। कई पुस्तकों-पत्रिकाओं में आधुनिक रेखाचित्र व आवरण चित्र प्रकाशित। कई शोध-ग्रंथों, संदर्भ ग्रंथों एवं गुरु नानक देव वि.वि. की एम.फिल. में अनुशंसित पुस्तकों में विस्तृत परिचय एवं रचनाएँ प्रकाशित। कई रचनाओं का अंग्रेजी, उर्दू व

गुजराती में अनुवाद प्रकाशित।

अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशन : तुलसा, ओ के 74136 यू.एस.ए. से प्रकाशित मासिक पत्रिका 'रोशनी' (उर्दू) में ग़ज़लें, लघुकथायें आदि प्रकाशित।

प्रसारण : आकाशवाणी एवं दूरदर्शन से समय-समय पर रचना पाठ व वार्तायें प्रसारित और अनेक कवि सम्मेलनों, मुशायरों में भागीदारी।

सम्मान-पुरस्कार : पर्यावरण विभाग, राजस्थान, कोटा नामदेव सभा, कथांचल उदयपुर द्वारा 'पगली' कहानी को कथाशिल्पी राजेन्द्र सक्सेना सर्वोत्तम कहानी पुरस्कार। नारा लेखन व पत्र-वाचन में कई विभागों द्वारा पुरस्कृत। अक्षरधाम समिति कैथल द्वारा 'प्रथम राष्ट्रीय अक्षर गौरव' सम्मान। संगम कला परिषद बैतूल मध्यप्रदेश द्वारा 'काव्य कुसुम' उपाधि। दैनिक भास्कर द्वारा 'आशीर्वाद एचीवर्स एवार्ड' तथा 'मधुबाला स्मृति सम्मान'। जिला प्रशासन द्वारा 'नागरिक सम्मान'। संस्कार भारती संस्थान दौसा द्वारा श्री शिवनारायण स्मृति सम्मान। अनुराग म्यूजिकल एंड कल्चरल सोसायटी, लालसोट (राजस्थान) द्वारा 'अनुराग साहित्य सम्मान 2007'। साहित्य मण्डल श्रीनाथद्वारा की ओर से 'हिन्दी भाषा भूषण सम्मान'। चेतना साहित्य परिषद लखनऊ द्वारा 'श्रीमती गीता स्मृति सम्मान'। 'ग्रीन अर्थ' एन.जी.ओ. कुरुक्षेत्र द्वारा आयोजित 'राष्ट्र स्तरीय महिला कविता प्रतियोगिता-2017' पर्यावरण संवर्द्धन में द्वितीय स्थान।

विशेष पुरस्कार : एयर इण्डिया एवं राजस्थान पत्रिका द्वारा आयोजित 'रेन्क एण्ड बोल्ट' प्रतियोगिता में जिला स्तरीय एवं राज्य स्तरीय प्रथम पुरस्कार, सिंगापुर की यात्रा अर्जित। शिक्षक दिवस 2008 में 'राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान'। राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर द्वारा 'देवराज उपाध्याय पुरस्कार'।

विशेष : सलाहकार संपादक 'द कन्टेम्प्रेरी हूज हू' अमेरिकी प्रकाशन। उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय शिक्षक रचनाकार प्रगति मंच कोटा शाखा। जिलाध्यक्ष, संगम कला परिषद बैतूल। भारतीय साहित्य परिषद कोटा द्वारा 'श्रीमती कृष्णा कुमारी का साहित्य में योगदान' मोनोग्राफ (लेखक-सुरेश वर्मा) प्रकाशित। कुछ हिन्दी आलेखों का राजस्थानी में अनुवाद।

सम्पर्क : 'चिर-उत्सव' सी-368, मोदी हॉ स्टल लाइन, तलवंडी, कोटा-324005
मो. : +91-91668 87276
ई-मेल : krishna.kumari.kamsin9@gmail.com
ब्लॉग : kavysrijan.blogspot.com

लो हम नैनीताल चले

"सैर कर दुनिया की ग़ाफ़िल, ज़िन्दगानी फिर कहाँ
ज़िन्दगानी ग़र रही तो नौजवानी फिर कहाँ।"

प्रकृति की अप्रितम सुन्दरता में, नैसर्गिक सौन्दर्य में जादुई आकर्षण होता है। जिस के पाश में बँध कर इन्सान पर्यटक बनने को विवश हो जाता है। जो एक बार इस अद्भुत रस का आस्वादन कर लेता है, वह बार-बार इसे पीने के लिए मचल-मचल जाता है। यही कुछ हमारे साथ होने लगा है। एक बार पर्वतीय वादियों में क्या घूम आए कि थोड़े-थोड़े दिनों में वहाँ जाने के बहाने ढूँढने लगते हैं। हम ग़लत भी कहाँ हैं। इस दौड़ती-भागती ज़िंदगी में कुछ पल चैन और सुकून के बिताना भी चाहिऐं ताकि जीवन में सन्तुलन बना रहे। और फिर क़ुदरत का वह शान्त वातावरण, हरी-भरी वादियाँ, कलकल निनादित निर्झर, चट्टानों से फूट कर बेतहाशा भागती दौड़ती नदियाँ, गगन चूमती पर्वत मालाऐं, सागर का सौम्य स्वरूप अहा! आनंद के ऐसे स्रोत भला और कहाँ प्राप्त हो सकते हैं। अब तो स्वप्निल (बिटिया) भी बार-बार भ्रमण करने की ज़िद करने लगी है।

हमारे रचनाकार होने का भी हमें कुछ लाभ मिल रहा है। देश के कोने-कोने में कार्यक्रम होते रहते हैं, हमें भी ख़ूब आमन्त्रण मिलते हैं। ख़ूबसूरत स्थान के प्रोग्राम को हम बिल्कुल नहीं छोड़ते। सितम्बर, 2002 ई. में ग़ाज़ियाबाद से हमें 'दलित साहित्य अकादमी' के वार्षिक समारोह का निमन्त्रण मिला और हम लोगों ने वहाँ से नैनीताल जाने का कार्यक्रम भी बना डाला। क्योंकि घूमने के लिए सितम्बर-अक्टूबर का समय ही श्रेष्ठ होता है। पर्यटन स्थलों पर इस समय मई-जून जैसी भीड़-भाड़ नहीं रहती एवं क़ीमतें भी क़ाफ़ी कम हो जाती हैं।

इस कार्यक्रम में कोटा के दो रचनाकार भी हमारा साथ दे रहे थे। अकेले तो हम भी नहीं जाते। निश्चित समय पर हम देहरादून एक्सप्रेस से रवाना हुए। शाम का खाना हम लोगों के साथ था ही। रात को 10 बजे हम सब ने मिल कर खाना खाया, फिर कुछ हँसी-मज़ाक़ विनोद होता रहा। लगभग 12 बजे हम सब अपनी-अपनी बर्थ पर हो लिए। थोड़ी देर आँख लगती, फिर खुल जाती। लेकिन सुबह 4 बजे बड़ी ज़ोर की आवाज़ें होने लगीं। नींद खुलनी ही थी, हम ने नीचे देखा तो हमारे पास की बर्थ पर एक छोटा-सा सामान्य परिवार था, जिन का सुबह का कार्यक्रम प्रारम्भ हो चुका था। उन्हीं के दो बच्चे बहुत चुलबुले थे, बहुत बतिया रहे थे, उन की बोल-चाल में गाँव का प्रभाव स्पष्ट नज़र आ रहा था। बच्चा सातवीं कक्षा में पढ़ता था, ऐसा उसी की बातों से ज्ञात हुआ। लड़की छोटी थी, होगी कोई 7-8 वर्ष की। दोनों की मासूम बातें, जिज्ञासाऐं जहाँ मन को अच्छी लग रही थीं। वहीं नींद में ख़लल भी हो जाने के कारण थोड़ी-थोड़ी खटक भी रही थी। उन सरल,